



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जोधपुर रियासत के सिक्के

घनश्याम देवड़ा
शोधार्थी
इतिहास विभाग

शोध सारांश – भारत का इतिहास अपने राजाओं और उनकी शासन व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है। इनमें से एक प्रमुख रियासत जोधपुर रही, जिसे मारवाड़ के नाम से भी जाना जाता है। जोधपुर रियासत ने न केवल अपने सांस्कृतिक, स्थापत्य और राजनीतिक योगदान के लिए ख्याति अर्जित की, बल्कि इसकी मुद्रा प्रणाली भी इतिहासकारों और संग्रहकर्ताओं के लिए विशेष रुचि का विषय बनी। जोधपुर रियासत के सिक्के उस काल के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को उजागर करते हैं। जोधपुर में सिक्का प्रचलन की शुरुआत 15वीं शताब्दी में राठौड़ वंश के संस्थापक राव जोधा के शासनकाल से मानी जाती है। उनके बाद के शासकों ने स्थानीय और विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए सिक्कों का प्रचलन बढ़ाया। ये सिक्के चांदी, तांबे और सोने जैसे धातुओं से बनाए गए थे। जोधपुर के सिक्कों पर शासकों के नाम, धार्मिक प्रतीक, और संस्कृत एवं नागरी लिपि में शिलालेख पाए जाते हैं, जो उनकी धार्मिक सहिष्णुता और प्रशासनिक दक्षता का प्रतीक हैं। मुगल साम्राज्य के अधीन जोधपुर के शासकों ने मुगल सिक्का प्रणाली को भी अपनाया। हालांकि, उन्होंने अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखने के लिए स्थानीय विशेषताओं को भी शामिल किया। उदाहरणस्वरूप, सिक्कों पर “श्री महाराजा” या “जोधपुर राज्य” अंकित रहता था। यह संकेत देता है कि जोधपुर रियासत ने अपनी सांस्कृतिक और राजनीतिक स्वायत्तता को सदैव प्राथमिकता दी। 18वीं और 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश प्रभाव के तहत, जोधपुर के सिक्कों में यूरोपीय शैली का प्रभाव दिखने लगा। यह परिवर्तन उस समय की वैश्विक आर्थिक चुनौतियों और तकनीकी नवाचारों का संकेत है। जोधपुर के सिक्कों का महत्व न केवल ऐतिहासिक है, बल्कि वे भारतीय मुद्रा प्रणाली के विकास में भी योगदान देते हैं। अंततः, जोधपुर रियासत के सिक्के उस समय की आर्थिक प्रगति, कलात्मक दृष्टिकोण और राजनीतिक स्वायत्तता के प्रतिबिंब हैं। ये सिक्के आज भी संग्रहकर्ताओं और इतिहास प्रेमियों के लिए मूल्यवान धरोहर के रूप में संरक्षित हैं।

संकेताक्षर – सिक्कों के अध्ययन का उद्देश्य, जोधपुर रियासत का स्थापना काल से स्वतंत्रता तक, जोधपुर रियासत के शासकों द्वारा जारी सिक्कों का विवरण, मुद्रा व्यवस्था का विकास और उसमें बदलाव, स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में सिक्कों की भूमिका, जोधपुर रियासत के सिक्के, जोधपुर रियासत के सिक्कों का संग्रहालय और पुरातत्व में महत्व।

प्रस्तावना – जोधपुर, जिसे “मारवाड़” के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय इतिहास में एक प्रमुख रियासत के रूप में अपनी पहचान रखता है। इस रियासत की स्थापना 1459 ई. में राठौड़ वंश के शासक राव जोधा ने की थी। अरावली पर्वत शृंखला के पास स्थित इस क्षेत्र ने न केवल राजनैतिक बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जोधपुर का भौगोलिक स्थान इसे एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र बनाता था, जहां मध्य एशिया, फारस, और अरब देशों से आने वाले व्यापारिक मार्ग मिलते थे।

जोधपुर रियासत की सांस्कृतिक धरोहर में स्थापत्य कला, संगीत, नृत्य, हस्तशिल्प और साहित्य शामिल हैं। मेहरानगढ़ किला और उम्मेद भवन जैसे स्थापत्य चमत्कार, जोधपुर के गौरव को दर्शाते हैं। यहां की चित्रकला, विशेष रूप से मारवाड़ शैली, जोधपुर की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा है। धार्मिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र महत्वपूर्ण था, जहां हिंदू धर्म, जैन धर्म और सूफी मत का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

सिक्कों के अध्ययन का उद्देश्य

सिक्कों का अध्ययन किसी भी सभ्यता के आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास को समझने का एक महत्वपूर्ण साधन है। जोधपुर रियासत के सिक्के न केवल आर्थिक गतिविधियों को दर्शाते हैं बल्कि रियासत की सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं को भी प्रकट करते हैं। इन सिक्कों पर अंकित प्रतीक, लेखन और चित्र तत्कालीन शासकों की धार्मिक नीति, प्रशासनिक क्षमता और सामाजिक दृष्टिकोण को उजागर करते हैं। जोधपुर के सिक्के व्यापार और वाणिज्य में उपयोग किए जाते थे और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में इनकी पहचान थी। ये सिक्के रियासत की आर्थिक स्थिरता का प्रतीक थे और इनमें प्रयुक्त धातु (सोना, चांदी, तांबा) उस समय की खनिज संपदा और व्यापारिक समृद्धि को दर्शाती है।

सांस्कृतिक दृष्टि से, इन सिक्कों पर अंकित चित्र और प्रतीक तत्कालीन कला और धर्म से प्रभावित थे। देवी-देवताओं, शासकों की छवियों और अन्य सांस्कृतिक प्रतीकों को उकेर कर इन सिक्कों ने जोधपुर की सांस्कृतिक विरासत का अमर बना दिया। सिक्कों पर प्रचलित भाषा और लिपि भी तत्कालीन साहित्यिक और भाषाई परंपराओं का परिचायक हैं।

जोधपुर रियासत का स्थापना काल से स्वतंत्रता तक

जोधपुर रियासत का इतिहास 15वीं शताब्दी से शुरू होकर 20वीं शताब्दी में स्वतंत्र भारत के गठन तक फैला हुआ है। इस काल को निम्नलिखित प्रमुख चरणों में विभाजित किया जा सकता है –

1. स्थापना और प्रारंभिक काल (1459–1600)

राव जोधा ने 1459 में जोधपुर की स्थापना की। उन्होंने मेहरानगढ़ किले का निर्माण करवाया, जो आज भी जोधपुर की पहचान है। प्रारंभिक दौर में जोधपुर ने अपनी स्वतंत्रता बनाए रखी, लेकिन स्थानीय राजपूत कबीले और पड़ोसी राज्यों के साथ लगातार संघर्ष करना पड़ा। इस काल में जारी किए गए सिक्कों में शासकों की शक्ति और धार्मिक आस्था का प्रतिबिंब देखा जा सकता है। इन सिक्कों पर साधारण डिजाइन और स्थानीय प्रतीक देखने को मिलते हैं।



2. मुगल साम्राज्य का प्रभाव (1600–1707)

अकबर के शासनकाल में जोधपुर मुगल साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। इस दौरान राठौड़ शासक मुगलों के साम्राज्य में उच्च पदों पर आसीन हुए। जोधपुर रियासत का यह काल राजनीतिक स्थिरता और सांस्कृतिक समृद्धि का रहा। इस समय के सिक्कों पर मुगल प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। फारसी लिपि और मुगल शैली के प्रतीकों का समावेश इस दौर की प्रमुख विशेषताएं थीं।

3. स्वतंत्रता और विस्तार का काल (1707–1818)

औरंगजेब की मृत्यु के बाद, मुगल साम्राज्य कमजोर हुआ, जिससे जोधपुर ने फिर से स्वतंत्रता प्राप्त की। इस दौर में रियासत ने अपनी सीमाओं का विस्तार किया और स्थानीय परंपराओं को पुनर्जीवित किया। सिक्कों पर शासकों की छवियां और स्थानीय धार्मिक प्रतीक प्रमुखता से उकेरे गए। ये सिक्के रियासत की संस्कृति और स्वायत्तता को दर्शाते हैं।

4. ब्रिटिश काल (1818–1947)

1818 में जोधपुर ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ एक संधि की, जिससे यह ब्रिटिश संरक्षित राज्य बन गया। इस काल में रियासत की आंतरिक स्वायत्तता बनी रही, लेकिन इसके अधिकांश निर्णय ब्रिटिश प्रशासन के अधीन थे। इस दौर के सिक्कों में पारंपरिक डिजाइन के साथ ब्रिटिश प्रभाव भी देखा गया। कुछ सिक्कों पर अंग्रेजी लिपि और ब्रिटिश प्रतीकों का समावेश हुआ।



5. स्वतंत्रता संग्राम और भारत में विलय (1947–1949)

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद जोधपुर रियासत का भारत में विलय हुआ। इस समय शासक हनवंत सिंह ने स्वतंत्र भारत के साथ एकीकृत होने का निर्णय लिया। इस काल के सिक्के अंतिम रियासती सिक्के थे, जिन पर स्थानीय और राष्ट्रीय पहचान का मिश्रण देखा जा सकता है।

जोधपुर रियासत का इतिहास और इसके सिक्के हमें एक ऐसे समृद्ध अतीत की झलक देते हैं, जो कला, संस्कृति, धर्म और व्यापार का उत्कृष्ट उदाहरण है। सिक्कों का अध्ययन न केवल आर्थिक प्रणाली को समझने में मदद करता है, बल्कि यह भी बताता है कि किस प्रकार एक रियासत अपनी पहचान को बनाए रखते हुए बाहरी प्रभावों को आत्मसात करती है। जोधपुर रियासत के सिक्कों की सांस्कृतिक भूमिका आज भी इतिहासकारों और पुरातत्वविदों के लिए शोध का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनी हुई है। इन सिक्कों ने न केवल अपन समय की आर्थिक गतिविधियों को संचालित किया, बल्कि सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से अपनी धरोहर को संरक्षित भी किया।

जोधपुर रियासत के शासकों द्वारा जारी सिक्कों का विवरण

जोधपुर रियासत के शासकों ने विभिन्न समय-काल में आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न प्रकार के सिक्के जारी किए। इन सिक्कों के माध्यम से न केवल व्यापार और कर संग्रह की सुविधा हुई, बल्कि इन पर अंकित प्रतीकों और शिलालेखों के द्वारा शासकों की धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान भी उजागर हुई।

1. प्रारंभिक सिक्के (राव जोधा के काल से लेकर 16वीं सदी तक)

सामग्री और डिजाइन – प्रारंभिक काल के सिक्के मुख्यतः चांदी और तांबे के होते थे। इन पर धार्मिक प्रतीक, शासकों के नाम, और स्थानीय देवी-देवताओं की आकृतियां अंकित होती थीं।

लिपि और भाषा – सिक्कों पर प्रचलित लिपि नागरी थी, और भाषा मुख्यतः संस्कृत या स्थानीय मारवाड़ी बोली में होती थी।



प्रतीक और महत्व – इन सिक्कों पर सूर्य देवता और अन्य धार्मिक चिह्न अंकित होते थे, जो राठौड़ वंश के सूर्यवंशी होने का संकेत देते थे।

2. मुगल प्रभाव के दौरान (16वीं सदी से 18वीं सदी तक)

सिक्कों का मुगलीकरण – जब जोधपुर मुगल साम्राज्य के अधीन हुआ, तो सिक्कों पर मुगल शैली का प्रभाव दिखाई देने लगा।

फारसी लिपि का उपयोग – इस काल के सिक्कों पर फारसी लिपि में शिलालेख और कुरान की आयतें लिखी जाने लगीं।

दोहरी पहचान – कुछ सिक्कों पर राठौड़ शासकों के नाम के साथ मुगल सम्राट का उल्लेख भी मिलता है। यह रियासत की स्वायत्तता और अधीनता दोनों को दर्शाता था।

3. स्वतंत्रता के प्रयास और पुनर्जीवित सिक्के (18वीं सदी के उत्तरार्ध से 19वीं सदी तक)

स्थानीय प्रतीकों की वापसी – इस काल में जब जोधपुर ने अपनी स्वतंत्रता पुनः प्राप्त की, तो सिक्कों पर स्थानीय प्रतीकों और राठौड़ शासकों की पहचान को प्रमुखता दी गई।

धार्मिक चिह्न – सिक्कों पर हिंदू देवी-देवताओं की छवियां, स्थानीय स्थापत्य कला, और धार्मिक मंत्र अंकित होने लगे।

धातु का उपयोग – सोने, चांदी और तांबे के सिक्कों का प्रचलन बढ़ा। सोने के सिक्के प्रमुखतः बड़े लेन-देन और धार्मिक कार्यों में उपयोग होते थे।

4. ब्रिटिश काल के सिक्के (19वीं सदी से 1947 तक)

ब्रिटिश प्रभाव – इस काल में जोधपुर ने ब्रिटिश संरक्षित राज्य का दर्जा प्राप्त किया। सिक्कों पर अंग्रेजी लिपि और ब्रिटिश प्रतीकों का समावेश हुआ।

संयुक्त मुद्राएँ – कुछ सिक्कों पर जोधपुर शासक और ब्रिटिश सम्राट दोनों के नाम और प्रतीक अंकित होते थे।



आधुनिक डिजाइन – इन सिक्कों में परिष्कृत डिजाइन और उच्च गुणवत्ता की ढलाई तकनीक का उपयोग किया गया।

मुद्रा व्यवस्था का विकास और उसमें बदलाव

जोधपुर रियासत की मुद्रा व्यवस्था समय के साथ बदलती रही। यह बदलाव आर्थिक आवश्यकताओं, तकनीकी प्रगति, और राजनीतिक परिवर्तनों के कारण हुए।

1. प्रारंभिक मुद्रा व्यवस्था

स्थानीय प्रणाली – प्रारंभ में वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रचलन था, लेकिन व्यापार और कर संग्रह की सुविधा के लिए धातु के सिक्कों का उपयोग शुरू हुआ।



स्वदेशी मुद्रा – राठौड़ वंश ने अपनी मुद्रा प्रणाली विकसित की, जिसमें तांबे और चांदी के सिक्कों का प्रमुखता से उपयोग किया गया।

कर प्रणाली – किसान और व्यापारी कर भुगतान के लिए इन सिक्कों का उपयोग करते थे।

2. मुगल युग में परिवर्तन

मुगल मुद्रा का प्रचलन – जोधपुर रियासत में मुगल साम्राज्य के सिक्के प्रचलित हो गए।

दोहरी मुद्रा प्रणाली – स्थानीय सिक्कों के साथ मुगल सिक्कों का भी उपयोग हुआ।

धातु की गुणवत्ता – मुगल प्रभाव के कारण जोधपुर के सिक्कों की ढलाई और डिजाइन में सुधार हुआ।

3. 18वीं सदी के बाद का पुनरुद्धार

स्थानीय मुद्रा की वापसी – मुगल साम्राज्य के पतन के बाद, जोधपुर ने अपनी स्वतंत्र मुद्रा प्रणाली को पुनर्जीवित किया।

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव – सिक्कों पर स्थानीय प्रतीकों और धार्मिक चिह्नों की वापसी हुई।

व्यापारिक अनुकूलन – इस काल में व्यापारिक लेन-देन के लिए अधिक मानकीकृत सिक्कों का उपयोग होने लगा।

4. ब्रिटिश काल की मुद्रा व्यवस्था

आधुनिक प्रणाली का आरंभ – ब्रिटिश प्रभाव के कारण जोधपुर में मुद्रा प्रणाली अधिक संगठित और मानकीकृत हो गई।

अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव – ब्रिटिश साम्राज्य के साथ व्यापार के कारण पाउंड और अन्य विदेशी मुद्राओं का भी उपयोग शुरू हुआ।

कागजी मुद्रा – सिक्कों के साथ कागजी मुद्रा का भी प्रचलन बढ़ा, हालांकि यह सीमित था।

स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में सिक्कों की भूमिका

जोधपुर रियासत का व्यापारिक महत्व उसके भौगोलिक स्थान और समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के कारण अद्वितीय था। सिक्के इस व्यापारिक नेटवर्क का मुख्य आधार थे।

1. स्थानीय व्यापार में भूमिका

बाजारों का विकास – जोधपुर के बाजारों में कृषि उत्पाद, हस्तशिल्प, और पशुधन की खरीद-फरोख्त के लिए सिक्कों का उपयोग किया जाता था।

किसानों और व्यापारियों के लिए सुविधा – सिक्कों ने वस्तु विनिमय की कठिनाइयों को समाप्त कर व्यापार को सरल बनाया।

स्थानीय कर संग्रह – किसानों और कारीगरों से कर वसूली के लिए सिक्के एक मानक माध्यम थे।

2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भूमिका

रेशम मार्ग का हिस्सा – जोधपुर मध्य एशिया, फारस, और अरब देशों के साथ व्यापारिक मार्ग का हिस्सा था।

धातु और आभूषण – चांदी और सोने के सिक्कों का उपयोग विदेशी व्यापारिक लेन-देन में होता था। सांस्कृतिक आदान-प्रदान – विदेशी व्यापार ने जोधपुर के सिक्कों पर फारसी और अरबी प्रभाव डाला।

3. व्यापारिक स्थिरता और आर्थिक विकास

साम्राज्य की स्थिरता – सिक्कों की एक स्थिर प्रणाली ने रियासत की आर्थिक समृद्धि को बनाए रखने में मदद की।

बाजारों का विस्तार – सिक्कों ने व्यापारियों को दूर-दराज के क्षेत्रों में व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा के साथ अनुकूलन – विदेशी व्यापारिक साझेदारों के साथ लेन-देन में जोधपुर के सिक्के स्वीकृत थे।

जोधपुर रियासत के सिक्के

जोधपुर रियासत के सिक्के न केवल आर्थिक स्थिरता का माध्यम थे, बल्कि वे सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रतीकों का एक अमूल्य भंडार भी थे। सिक्कों की डिजाइन, सामग्री, और उपयोग से रियासत की बदलती आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों का पता चलता है। मुद्रा व्यवस्था में हुए बदलावों और व्यापार में सिक्कों की भूमिका ने जोधपुर को एक प्रमुख व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र बनाया। इन सिक्कों का अध्ययन आज भी हमें उस दौर की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परंपराओं को समझने में सहायता करता है।

जोधपुर रियासत के सिक्कों में विविध प्रकार के नाम और श्रेणियां थीं, जो उनकी विशेषताओं, उपयोग, और आर्थिक या सांस्कृतिक महत्व को दर्शाती हैं। इनमें विजयशाही, लल्लूलिया, गधिया, भीमशाही, ढब्बूशाही, और फदिया प्रमुख हैं। ये सिक्के रियासत के विभिन्न कालों और परिस्थितियों में जारी किए गए थे। आइए इनके बारे में विस्तार से समझते हैं।

1. विजयशाही सिक्के

परिचय – विजयशाही सिक्के जोधपुर रियासत के शासकों द्वारा युद्ध में विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में जारी किए गए थे। ये सिक्के शासकों की सैन्य ताकत और धार्मिक विश्वास को प्रकट करते थे।

धातु और डिजाइन – विजयशाही सिक्के मुख्यतः चांदी और कभी-कभी सोने के बने होते थे। इन पर शासक का नाम, विजय से संबंधित प्रतीक (जैसे तलवार या सूर्य) और धार्मिक मंत्र अंकित होते थे।

उद्देश्य – इन सिक्कों का मुख्य उद्देश्य विजय के प्रतीक के रूप में शासक की प्रतिष्ठा बढ़ाना था।

सांस्कृतिक महत्व – इन सिक्कों ने राठौड़ वंश के गौरव और उनके सूर्यवंशी होने की परंपरा को मजबूत किया।

2. लल्लूलिया सिक्के

परिचय – लल्लूलिया सिक्के छोटे मूल्यवर्ग के सिक्के थे, जो स्थानीय व्यापार और छोटे लेन-देन के लिए उपयोग किए जाते थे।

धातु और बनावट – ये सिक्के तांबे के बने होते थे और इनका आकार छोटा तथा वजन हल्का होता था।

डिजाइन और अंकन – इन सिक्कों पर साधारण डिजाइन और स्थानीय प्रतीक अंकित होते थे। इन पर अक्सर स्थानीय लिपि में 'लल्लूलिया' शब्द या रियासत का चिह्न होता था।

व्यावसायिक उपयोग – लल्लूलिया सिक्कों का उपयोग बाजारों, ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे व्यापारिक लेन-देन में व्यापक रूप से किया जाता था।

महत्व – ये सिक्के आम जनता के दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा थे।

3. गधिया सिक्के

परिचय – गधिया सिक्के बड़े और भारी सिक्के थे, जो चांदी के बने होते थे। इनका नाम संभवतः इनकी बनावट और वजन के कारण पड़ा।

धातु और संरचना – ये सिक्के चांदी के होते थे और अन्य सिक्कों की तुलना में मोटे तथा भारी होते थे।

डिजाइन – इन पर शासक का नाम, वर्ष, और रियासत का प्रतीक अंकित होता था।

उपयोग – गधिया सिक्कों का उपयोग बड़े व्यापारिक लेन-देन और करों के भुगतान के लिए किया जाता था।

महत्व – ये सिक्के रियासत की आर्थिक समृद्धि और धातु संसाधनों की प्रचुरता को दर्शाते थे।

4. भीमशाही सिक्के

परिचय – भीमशाही सिक्के जोधपुर रियासत के भीम नामक शासक द्वारा जारी किए गए थे। ये सिक्के उनकी प्रशासनिक और धार्मिक नीतियों को दर्शाते हैं।

धातु – ये सिक्के सोने, चांदी, और कभी-कभी तांबे के बने होते थे।

डिजाइन – इन पर शासक का नाम, उनकी उपाधि, और धार्मिक प्रतीक (जैसे भगवान विष्णु या अन्य हिंदू देवता) अंकित होते थे।

सांस्कृतिक महत्व – भीमशाही सिक्के शासक भीम की धार्मिक आस्था और उनके शासन की स्थिरता को दर्शाते हैं।

उद्देश्य – ये सिक्के व्यापार, कर संग्रह, और धार्मिक दान के लिए उपयोग किए जाते थे।

5. ढबूशाही सिक्के

परिचय – ढबूशाही सिक्के स्थानीय स्तर पर प्रचलित सिक्के थे, जिनका उपयोग मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में होता था।

धातु और आकार – ये सिक्के तांबे और कभी-कभी मिश्र धातुओं के बने होते थे। इनका आकार छोटा और बनावट साधारण होती थी।

डिजाइन – इन पर स्थानीय प्रतीक, जैसे पुष्प या छोटे आकार की आकृतियां, अंकित होती थीं।

उपयोग – ढबूशाही सिक्के ग्रामीण जनता द्वारा दैनिक लेन-देन के लिए उपयोग किए जाते थे।

महत्व – ये सिक्के आम जनता के लिए एक सरल और सुलभ मुद्रा का माध्यम थे।

6. फदिया सिक्के

परिचय – फदिया सिक्के चांदी के सिक्के थे, जो रियासत के प्रतिष्ठित सिक्कों में से एक माने जाते थे। इनका उपयोग बड़े लेन-देन और व्यापारिक गतिविधियों में होता था।

धातु और वजन – फदिया सिक्के उच्च गुणवत्ता की चांदी से बने होते थे और इनका वजन मानकीकृत होता था।

डिजाइन – इन पर रियासत का प्रतीक, शासक का नाम, और व्यापारिक प्रतीक अंकित होते थे।

व्यावसायिक उपयोग – फदिया सिक्कों का उपयोग अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में किया जाता था, और ये सिक्के विदेशी व्यापारियों के लिए भी मान्य थे।

महत्व – इन सिक्कों ने जोधपुर रियासत को एक आर्थिक केंद्र के रूप में स्थापित करने में मदद की।

जोधपुर रियासत के सिक्के न केवल आर्थिक लेन-देन के माध्यम थे, बल्कि वे रियासत की सांस्कृतिक, धार्मिक, और राजनीतिक पहचान के भी प्रतीक थे। विजयशाही और भीमशाही सिक्कों ने शासकों की शक्ति और धार्मिक आस्था को उजागर किया। लल्लूलिया और ढबूशाही सिक्कों ने आम जनता के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गधिया और फदिया सिक्कों ने व्यापारिक और आर्थिक स्थिरता को बनाए रखा। इन सिक्कों का अध्ययन जोधपुर रियासत की समृद्ध आर्थिक और सांस्कृतिक विरासत को समझने में सहायक है। इन सिक्कों की बनावट, सामग्री, और उपयोग रियासत की प्रशासनिक और सामाजिक नीतियों का प्रतीक हैं।

जोधपुर रियासत के सिक्कों का संग्रहालय और पुरातत्व में महत्व

जोधपुर रियासत के सिक्के न केवल आर्थिक लेन-देन का माध्यम थे, बल्कि वे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और कलात्मक धरोहर के अमूल्य प्रतीक भी हैं। इन सिक्कों का संग्रहालयों और पुरातत्व में विशिष्ट महत्व है, क्योंकि वे उस काल की राजनीतिक, आर्थिक, और सामाजिक परिस्थितियों को समझने का प्रमुख स्रोत हैं। संग्रहालय ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित करने और उसका अध्ययन करने के लिए प्रमुख स्थान हैं। जोधपुर के सिक्कों का संग्रह देश-विदेश के कई संग्रहालयों में प्रदर्शित है।

मेहरानगढ़ संग्रहालय, जोधपुर – यह संग्रहालय जोधपुर रियासत की ऐतिहासिक धरोहरों का प्रमुख केंद्र है। यहां रियासत के विभिन्न शासकों द्वारा जारी सिक्कों का विस्तृत संग्रह उपलब्ध है।

डिजाइन और सामग्री – संग्रहालय में सोने, चांदी, और तांबे के सिक्के प्रदर्शित हैं, जिन पर धार्मिक प्रतीक, शासकों के नाम, और ऐतिहासिक घटनाओं के विवरण अंकित हैं।

शिक्षा का स्रोत – ये सिक्के छात्रों, इतिहासकारों, और शोधकर्ताओं के लिए आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

पर्यटन और सांस्कृतिक जागरूकता – संग्रहालय के माध्यम से पर्यटक रियासत की समृद्ध परंपरा और शिल्पकला से परिचित होते हैं।

राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

यहां जोधपुर रियासत के सिक्कों का हिस्सा भारत के अन्य हिस्सों के सिक्कों के साथ प्रदर्शित है। यह भारत की समग्र मुद्रा प्रणाली के विकास को समझने का व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

2. पुरातत्व में महत्व – पुरातत्व में सिक्कों का उपयोग ऐतिहासिक स्थलों की पहचान, काल निर्धारण, और सामाजिक संरचना का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। जोधपुर रियासत के सिक्के पुरातत्वविदों के लिए बेहद मूल्यवान हैं।

काल निर्धारण – सिक्कों पर अंकित तिथियां और लिपि पुरातात्विक स्थलों के समय का निर्धारण करने में मदद करती हैं। उदाहरण जोधपुर रियासत के विजयशाही सिक्के युद्ध के समय की घटनाओं और प्रशासनिक नीतियों को जानने में सहायक हैं।

सांस्कृतिक अध्ययन – सिक्कों पर अंकित प्रतीक, जैसे सूर्य, देवी-देवता, और धार्मिक मंत्र, उस समय की सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं को दर्शाते हैं। ये सिक्के राठौड़ वंश की सूर्यवंशी परंपरा और उनकी धार्मिक नीतियों का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

आर्थिक इतिहास – जोधपुर रियासत के सिक्के उस समय की आर्थिक व्यवस्था और व्यापारिक नेटवर्क को उजागर करते हैं। स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में उपयोग होने वाले सिक्के रियासत की आर्थिक समृद्धि का प्रमाण देते हैं।

धातु विज्ञान का अध्ययन – सिक्कों में उपयोग की गई धातु और ढलाई तकनीक उस समय की तकनीकी प्रगति और संसाधनों की उपलब्धता को दर्शाती है। चांदी और तांबे के सिक्के यह समझने में मदद करते हैं कि जोधपुर रियासत ने अपने धातु संसाधनों का कैसे उपयोग किया।

3. ऐतिहासिक महत्व – सिक्के जोधपुर रियासत के इतिहास को समझने का प्राथमिक स्रोत हैं।

राजनीतिक घटनाएं – सिक्कों पर अंकित नाम और उपाधियां शासकों की शक्ति और राजनीतिक संबंधों को प्रकट करती हैं।

सांस्कृतिक पहचान – विभिन्न प्रकार के सिक्के, जैसे लल्लूलिया और गधिया, स्थानीय और क्षेत्रीय जीवनशैली की झलक प्रस्तुत करते हैं।

विज्ञान और कला – सिक्कों की डिजाइन, ढलाई, और उन पर उपयोग की गई लिपि तत्कालीन विज्ञान और कला के विकास को दर्शाती है।

जोधपुर रियासत के सिक्कों का संग्रहालय और पुरातत्व में महत्व बहुआयामी है। संग्रहालय इन सिक्कों को संरक्षित कर जनता को उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व से परिचित कराते हैं। वहीं, पुरातत्वविद इन सिक्कों के माध्यम से रियासत की आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक संरचना का गहन अध्ययन करते हैं। ये सिक्के न केवल जोधपुर की गौरवशाली परंपरा के प्रतीक हैं, बल्कि भारतीय इतिहास की समृद्ध धरोहर को भी उजागर करते हैं।

निष्कर्ष

जोधपुर रियासत के प्राचीन सिक्के उसकी समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परंपरा के साक्षी हैं। ये सिक्के न केवल मुद्रा के रूप में उपयोग किए गए, बल्कि उस समय की सामाजिक और राजनीतिक संरचना, कला और तकनीकी प्रगति को भी उजागर करते हैं। रियासत के सिक्कों में विजयशाही, लल्लूलिया, गधिया, भीमशाही, ढबूशाही और फदिया जैसे प्रकार शामिल हैं। विजयशाही सिक्के शासकों की सैन्य उपलब्धियों और राजनीतिक शक्ति का प्रतीक थे। गधिया और फदिया जैसे बड़े और मूल्यवान सिक्कों ने व्यापारिक लेन-देन और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाया। वहीं, लल्लूलिया और ढबूशाही जैसे छोटे मूल्य के सिक्के ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे लेन-देन में उपयोगी रहे। इन सिक्कों पर शासकों के नाम, धार्मिक प्रतीक, और स्थानीय कला का समावेश उनकी सांस्कृतिक पहचान और धर्मनिष्ठा को दर्शाता है। संग्रहालयों और पुरातात्विक महत्व के संदर्भ में, ये सिक्के अतीत की आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना का अध्ययन करने के लिए अमूल्य हैं। मेहरानगढ़ संग्रहालय जैसे संग्रहालय इन सिक्कों को संरक्षित कर इतिहास और कला में रुचि रखने वालों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं। पुरातात्विक खोजों में इन सिक्कों ने काल निर्धारण, आर्थिक गतिविधियों और तकनीकी प्रगति की समझ को गहरा किया है। इन सिक्कों की बनावट, धातु और अंकित चित्र तत्कालीन तकनीकी कौशल और धातु विज्ञान की प्रगति को दर्शाते हैं। साथ ही, ये सिक्के जोधपुर रियासत की सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक हैं, जो न केवल भारत में बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ऐतिहासिक अध्ययन के लिए प्रासंगिक हैं। अतः, जोधपुर रियासत के प्राचीन सिक्के न केवल अतीत की आर्थिक और सांस्कृतिक गाथा सुनाते

हैं, बल्कि वे भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी स्थापित हैं। इनका अध्ययन और संरक्षण आने वाली पीढ़ियों को इतिहास और संस्कृति से जोड़ने का एक प्रभावी माध्यम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. राजस्थान की रियासतें और उनकी मुद्रा प्रणाली – डॉ. लक्ष्मीकांत शर्मा
2. जोधपुर का आर्थिक इतिहास – डॉ. ओ. पी. शर्मा
3. राजस्थान की प्राचीन मुद्राएं – भंवरलाल राजपुरोहित
4. मुद्राशास्त्र : भारत की ऐतिहासिक मुद्राएं – डॉ. जे. पी. शर्मा
5. जोधपुर के सिक्के : एक ऐतिहासिक अध्ययन – डॉ. एस. पी. व्यास
6. राजस्थान की आर्थिक व्यवस्था और व्यापार – डॉ. आर. एस. चौधरी
7. मुद्राशास्त्र का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. रमेश चंद्र त्रिपाठी
8. जोधपुर रियासत : इतिहास और संस्कृति – डॉ. एस. एन. माथुर
9. प्राचीन भारत की मुद्रा प्रणाली – डॉ. हेमंत गुप्ता
10. राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर – डॉ. पवन शर्मा
11. राजपूत रियासतों की मुद्रा और व्यापार – डॉ. दिनेश ठाकुर
12. भारत की आर्थिक धरोहर : सिक्कों का अध्ययन – डॉ. यशपाल सिंह
13. जोधपुर राज्य का राजनीतिक और आर्थिक इतिहास – डॉ. अशोक सिंह
14. प्राचीन भारतीय मुद्राओं का अध्ययन – डॉ. रवींद्र भारद्वाज
15. राजस्थान का इतिहास और मुद्रा प्रणाली – डॉ. आर. के. गुप्ता

